प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ से सब कुछ लेने के बाद भी आदमी खुश क्यों नहीं था?
2. अपना सब कुछ दे देने पर भी पेड़ खुश क्यों था?
3. पेड़ ने आदमी के बचपन से बुढ़ापे तक की किन-किन जरूरतों को पूरा किया?
4. पेड़ को दानी क्यों कहा गया है?
5. बड़ा होने पर लड़का दु:खी क्यों रहने लगा?
6. **खाली जगहों को भरिए-**

   (क) पेड़ छोटे लड़के से .... करता था।

   (ख) वह पेड़ के साथ .... खेलता।

   (ग) मुझे पैसों की .... है।

   (घ) मैं .... खरीदना चाहता हूँ।

पाठ से आगे

1. दुनिया में पेड़ों की संख्या को लगातार कम किया जा रहा है। अगर पेड़ों की संख्या इसी प्रकार कम होती जाए तो बीस वर्ष के बाद का समाज कैसा होगा?
2. पेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
3. दिये गये शब्दों का प्रयोग कर एक छोटी-सी कहानी लिखिए।

   मेढक, तालाब, बगुला, बच्चे, मछली, साँप
4. 'मेरा प्रिय वृक्ष' विषय पर 50 शब्द लिखिए।

व्याकरण

1. **नीचे दिये गये शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर उनके लिंग बताइये -**

   उदाहरण   शाखा - (स्त्रीलिंग) पेड़ की शाखा टूट कर गिर गई।

   आम -

   खिचड़ी -

   रंग -

   बन्धु -

   बाज़ार -

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in

2. **निम्नलिखित वाक्य वर्तमान काल में है । इन्हें क्रमशः भूतकाल और भविष्यत्काल में लिखिए।**

(क) मुझे पैसों की जरूरत है। (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

(ख) मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ । (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

(ग) क्या तुम मुझे नाव दे सकते हो? (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

3. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए-**

(क) युवक सभी .... को काटकर ले गया । (शाखा, शाखाओं)

(ख) आदमी ने तना से नाव .... । (बनाई, बनाया)

(ग) कई साल बीत .... । (गए, गया)

(घ) वह .... की माला बनाता था । (फूल, फूलों)

(ङ) मुझे .... की जरूरत है । (पैसों, पैसा)

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. आप अपने आस-पास के पेड़ों की सूची बनाइये तथा बड़े समूह में साथियों से चर्चा कीजिए कि ये पेड़ हमारे दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोगी हैं?
2. किन्हीं चार फलदार वृक्षों के चित्र बनाइए।
3. पेड़ हमारे लिए धन के स्रोत हैं, कैसे? चर्चा कीजिए।

5 वीर कुँवर सिंह

“ बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर
बंगला पर उड़ेला अबीर........”

फाल्गुन माह के प्रारंभ होते ही इस तरह के गीत अक्सर बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में सुनाई पड़ने लगते हैं। यह गीत बाबू कुँवर सिंह की शौर्य गाथा का प्रतीक है। उनके जीवन से संबंधित आज भी कुछ ऐसी बातें प्रचलित हैं, जिन पर सहसा किसी को विश्वास नहीं होता। शायद हम भी विश्वास नहीं कर पाएँ।

एक समय की बात है। अंग्रेजी फौज बाबू कुँवर सिंह का पीछा करते हुए गंगा नदी के तट पर पहुँच गयी। बाबू कुँवर सिंह नाव से गंगा नदी को पार कर रहे थे। अचानक अंग्रेजों की गोली उनके दाहिने हाथ में लगी। बिना एक क्षण की देरी किए बाबू कुँवर सिंह ने अपनी ही तलवार से उस हाथ को काटकर गंगा मैया को भेंट चढ़ा दी। है न आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय बात! प्रसिद्ध नाटककार एवं कवि स्व. रामेश्वर सिंह ‘कश्यप’ ने इसी घटना को कविता के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

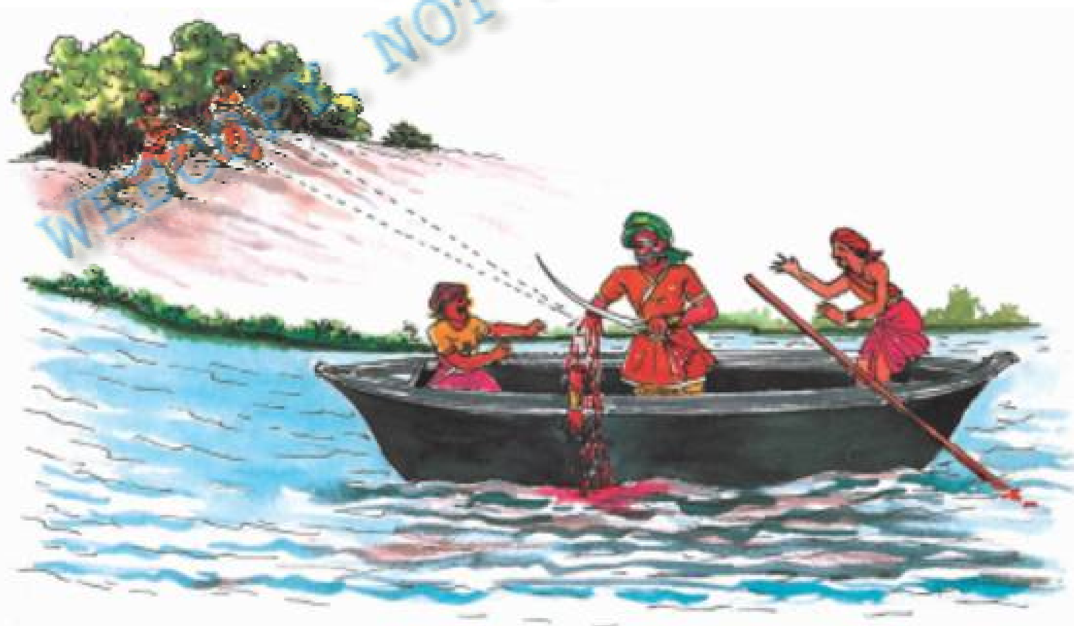

"मातु गंग

तोहरा तरंग पर

हमार बाँह अरपित बा।"

दूसरी घटना जो उनके जीवन से ही संबंधित है। कहा जाता है कि जगदीशपुर से आरा के बीच बाबू कुँवर सिंह ने एक सुरंग का निर्माण करवाया था। वे उसी सुरंग से घोड़े पर सवार होकर जगदीशपुर से आरा तथा आरा से जगदीशपुर आते-जाते थे। इस सुरंग का प्रयोग वे प्राय: युद्ध के समय किया करते थे। आज भी इस सुरंग के अवशेष आरा के महाराजा कॉलेज में देखे जा सकते हैं। जो आज भी एक पहेली बनी हुई है।

वीर कुँवर सिंह का जन्म भोजपुर (आरा) जिला के जगदीशपुर गाँव में सन् 1782 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम साहबजादा सिंह तथा माता का नाम पंचरतन कुँवर था। उनके पिता जगदीशपुर रियासत के जमींदार थे। कुँवर सिंह की शिक्षा की व्यवस्था उनके पिता ने घर पर ही की थी। जहाँ उन्होंने संस्कृत के अलावा फारसी भी सीखी, परंतु बाबू कुँवर सिंह का मन घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में लगता था।

बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् 1827 ई. में अपनी रियासत की जिम्मेदारी संभाली। उन दिनों ब्रिटिश हुकूमत का अत्याचार चरम पर था। इस अत्याचार का विरोध तथा इस व्यवस्था को बदलने का संकल्प बाबू कुँवर सिंह ने मन-ही-मन ले लिया और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब उन्हें अंग्रेजों से लोहा लेने का सही वक्त मिलेगा।

1857 की क्रांति का शंखनाद हो चुका था। बाबू कुँवर सिंह इसी अवसर की तलाश में थे। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के विरोध का बिगुल फूँक दिया। 25 जुलाई, 1857 को दानापुर छावनी की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया। बाबू कुँवर सिंह का सम्पर्क इनसे पहले से ही था। सैनिक सोन नहर पार कर आरा की ओर चल पड़े। आरा पहुँचकर सैनिकों ने बाबू कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए जेल की सलाखें तोड़ डाली और कैदियों को आजाद करा लिया। 27 जुलाई, 1857 को बाबू कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त की तथा सिपाहियों ने उन्हें फौजी सलामी दी। इस समय तक आरा 1857 की क्रांति के विद्रोह का केन्द्र स्थल तथा बाबू कुँवर सिंह इस क्रांति के नेता के रूप में उभर चुके थे।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

आरा की इस लड़ाई की ज्वाला बिहार में सर्वत्र फैल चुकी थी। अंग्रेजों ने अपना दमन-चक्र चलाया। बाबू कुँवर सिंह एवं अंग्रेजी फौज के बीच भीषण युद्ध हुआ। अंतत: 13 अगस्त, 1857 को अंग्रेजी फौज ने बाबू कुँवर सिंह की सेना को पराजित कर जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया। फिर भी, बाबू कुँवर सिंह का मनोबल नहीं टूटा। उन्होंने अंग्रेजों से इसका बदला लेने की ठानी। इसके लिए उन्होंने योजना बनानी प्रारंभ कर दी। उन्होंने रीवा, काल्पी, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों की यात्रा की तथा वहाँ के राजाओं एवं

जमींदारों से मुलाकात की। उनकी कीर्ति पूरे उत्तर भारत में फैल गयी। कुँवर सिंह की इस विजय यात्रा से अंग्रेजों के होश उड़ गए। कई स्थानों के सैनिक एवं राजा, कुँवर सिंह की अधीनता में लड़े। आजादी की यह यात्रा आगे बढ़ती रही, लोग शामिल होते गए और उनकी अगुवाई में लड़ते रहे। इस प्रकार ग्वालियर तथा जबलपुर के सैनिकों के सहयोग से सफल सैन्य रणनीति का प्रदर्शन करते हुए वे लखनऊ पहुँचे। इसके बाद उन्होंने आजमगढ़ की ओर कूच लिया। 22 मार्च 1858 को भीषण युद्ध के पश्चात बाबू कुँवर सिंह ने आजमगढ़ पर कब्जा कर लिया। बाबू कुँवर सिंह ने एक बार फिर आजमगढ़ में अंग्रेजों को हराया। इसी प्रकार अंग्रेजी सेना को परास्त करते हुए 23 अप्रैल, 1858 को उन्होंने जगदीशपुर में स्वाधीनता की विजय पताका फहरायी। इसी दिन विजय उत्सव मनाते हुए यूनियन जैक (अंग्रेजों का झंडा) को उतारकर अपना झंडा फहराया गया।

इस समय तक बाबू कुँवर सिंह की उम्र 80 वर्ष हो चुकी थी। एक कवि ने उनकी उम्र एवं उनके रण कौशल को देखते हुए लिखा है–

अस्सी वर्षों की हड्डी में, जागा जोश पुराना था,
सब कहते हैं, कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था।

स्वाधीनता सेनानी बाबू कुँवर सिंह युद्ध कला में पूरी तरह कुशल थे। छापामार युद्ध करने में उन्हें महारत हासिल थी। कुँवर सिंह के रण कौशल को समझने में अंग्रेजी सेना नायक पूर्णतः असमर्थ थे। दुश्मनों को उनके सामने से या तो भागना पड़ता था या कटकर मरना पड़ता था। भारत माता का ऐसा महान सपूत 26 अप्रैल, 1858 को इस संसार से हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो गया। प्रसिद्ध कवि मनोरंजन प्रसाद सिंह ने सत्य ही लिखा है–

चला गया यों कुँवर अमरपुर, साहस से सब अरिदल जीत,
उसका चित्र देखकर अब भी, दुश्मन होते हैं भयभीत।
वीरप्रसविनी भूमि धन्य वह, धन्य वीर वह अनन्य अतीत,
गाते थे और गावेंगे हम, हरदम उसकी जय की गीत।
वह स्वतंत्रता का सैनिक था।
आजादी का दीवाना था।

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

शौर्य – वीरता, पराक्रम **अवशेष** – बचा हुआ भाग **रियासत** – राज्य

सुरंग – धरती के अंदर आने-जाने के लिए बना रास्ता **हुकूमत** – शासन।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. वीर कुँवर सिंह से संबंधित किसी एक प्रसंग का उल्लेख कीजिए जो आपको अविश्वसनीय लगता है।

2. **वीर कुँवर सिंह के जीवन से जुड़े कुछ घटनाक्रम तिथियों के साथ स्तंभ 'क' एवं स्तंभ 'ख' में दिए गए हैं। सही-सही उनका मिलान कीजिए।**

(क)	(ख)
(i) वीर कुँवर सिंह द्वारा स्वाधीनता की विजय पताका फहराना	26 अप्रैल 1858
(ii) दानापुर सैनिक छावनी की सैनिक टुकड़ी द्वारा विद्रोह	23 अप्रैल, 1858
(iii) वीर कुँवर सिंह की मृत्यु	25 जुलाई, 1857
(iv) अंग्रेजी फौज द्वारा जगदीशपुर पर अधिकार	27 जुलाई, 1857
(v) आरा पर विजय	13 अगस्त 1857

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए –**

   (क) वीर कुँवर सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?

   (ख) उनके माता-पिता का नाम क्या था?

   (ग) ब्रिटिश झंडे को किस नाम से जाना जाता है?

   (घ) वीर कुँवर सिंह ने अपनी रियासत की जिम्मेवारी कब संभाली?

   (ङ) कुँवर सिंह को किस क्षेत्र में ज्यादा रुचि थी?

पाठ से आगे

1. वीर कुँवर सिंह के किस कार्य से आप ज्यादा प्रभावित हैं और क्यों?
2. 1857 की क्रांति के समय कुँवर सिंह की जगह आप होते तो क्या करते?
3. 23 अप्रैल को बिहारवासी किस दिवस के रूप में मनाते हैं?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

4. "वीर कुँवर सिंह एक योद्धा ही नहीं बल्कि एक कुशल नेतृत्त्वकर्त्ता भी थे।" इस कथन के संबंध में अपना विचार व्यक्त कीजिए।

5. वीर कुँवर सिंह के जीवन का कोई अंश क्या आपके जीवन से मेल खाता है? उल्लेख कीजिए तथा अपने मित्रों को बताइए।

व्याकरण

1. इन शब्दों के मानक उच्चारण कीजिए-

कुँवर, जगदीशपुर, अविश्वसनीय, आजमगढ़, रणनीति, वीरप्रसविनी, स्वतंत्रता, अवशेष, फाल्गुन, प्रसिद्ध, शौर्य

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(क) रियासत –

(ख) झंडा –

(ग) भूमि –

(घ) स्वतंत्र–

(ङ) प्रतीक्षा–

(च) संकल्प–

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. वीर कुँवर सिंह की तरह बिहार के अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के कार्यों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर अपने साथियों को सुनाइए।
2. पठित पाठ के आधार पर एक लघु नाटक का निर्माण कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
3. पाठ में आए कविता की पंक्तियों को कागज पर लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
4. अंग्रेजों की चौकसी के बावजूद कुँवर सिंह गंगा पार कर जगदीशपुर पहुँच गए। उनके इस सफलता के कारणों की चर्चा अपने शिक्षक से कीजिए।

6 गंगा स्तुति

बड़-सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे।।

कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होए, पुनमति गंगे।।

एक अपराध छेमब मोर जानी।
परसल माय पाय तुअ पानी।।

कि करब जप-तप जोग धेयाने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने।।

भनई विद्यापति समदओं तोही।
अन्तकाल जनु विसरहु मोही।।

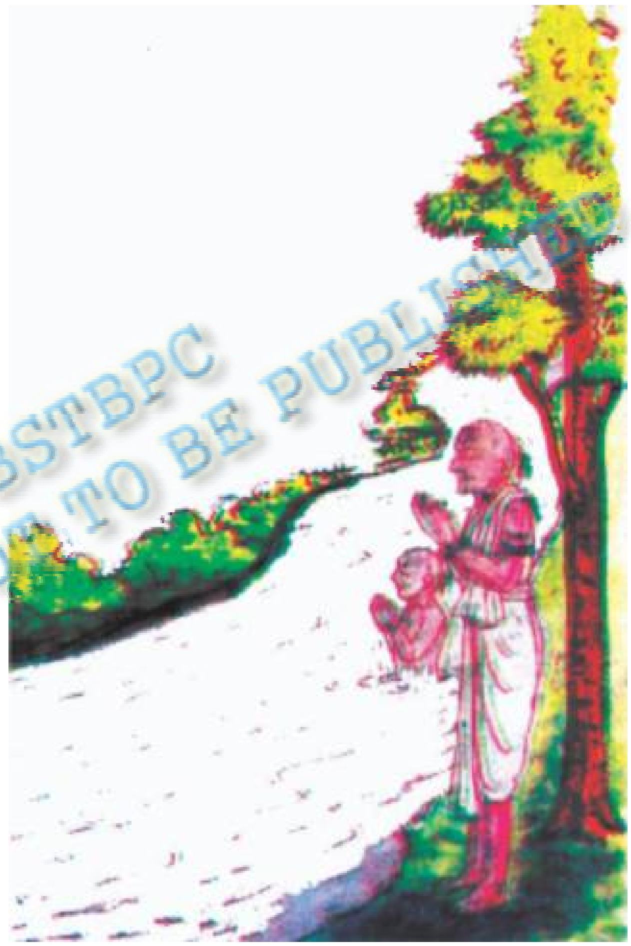

-विद्यापति

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

दरसन-दर्शन	**सनाने**-स्नान करना	**छेमब**- क्षमा करना	**विमल**-पवित्र
भनई- कहते हैं	**पुनमति**-बार-बार	**समदओं**-प्रार्थना करना	**परसल**-स्पर्श, छूना ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'गंगा-स्तुति' कविता के कवि कौन हैं?
2. गंगा के किनारे को छोड़ते समय कवि की आँखों से आँसू क्यों बह रहे थे?
3. कवि गंगा से किस अपराध की क्षमा माँगता है?
4. **कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए**

   (क) कि करब जप-तप जोग धेयाने

   ....

   (ख) ....

   अंत काल जनु बिसरहु मोही।

पाठ से आगे

1. इस पाठ का शीर्षक "गंगा-स्तुति" रखा गया है। आप इस शीर्षक से सहमत हैं या असहमत? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
2. गंगा के अतिरिक्त अन्य नदियाँ भी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। इन नदियों का हमारे दैनिक जीवन में क्या महत्व है, उल्लेख कीजिए।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए

   (क) पाओल..............................

   (ख) छोड़इत..............................

   (ग) समदओं..............................

   (घ) समाने ....

   (ङ) पाय ....

गतिविधि

1. गंगा के उद्गम स्थल से उसके समुद्र में मिलने तक की यात्रा के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।
2. गंगा के किनारे बसे शहरों की सूची बनाइए। इन शहरों में स्थित कल-कारखानों से गंगा नदी पर किस प्रकार का दुष्प्रभाव पड़ता है। इस पर अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए एवं लिखिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
Developed by: ABSOL www.absol.in

7 साइकिल की सवारी

भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है। सोचता हूँ, भगवान ने ये दोनों विद्याएँ भी खूब बनाई हैं। एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर तमाशा देखिए, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गई। न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं। पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गई है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते।

शायद 1932 की बात है कि बैठे-बैठे ख्याल आया, चलो साइकिल चलाना सीख लें। और इसकी शुरुआत यों हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा। अब आप से क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे ख्याल हमारे मन में उठे। सोचा, क्या हमीं जमाने भर में फिसड्डी रह गए हैं। सारी दुनिया चलाती है, ज़रा-ज़रा से लड़के चलाते हैं, मूर्ख और गँवार चलाते हैं, हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े-लिखे हैं। क्या हमीं नहीं चला सकेंगे? आखिर इसमें मुश्किल क्या है? कूदकर चढ़ गए और तबड़-तोड़ पाँव मारने लगे। और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है तब टन-टन करके घंटी बजा दी। न हटा तो क्रोधपूर्ण आँखों से उसकी तरफ देखते हुए निकल गए। बस, यही तो सारा गुर है इस घोड़े की सवारी का! कुछ ही दिनों में सीख लेंगे। बस महाराज! हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, परवाह नहीं।

दूसरे दिन हमने अपने फटे-पुराने कपड़े तलाश किए और उन्हें ले जाकर श्रीमतीजी के सामने पटक दिया कि इनको ज़रा मरम्मत तो कर दो।

श्रीमती जी ने हमारी तरफ अचरज भरी दृष्टि से देखा और कहा, "इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है जो मरम्मत करूँ! इन्हें तो फेंक दिए थे। आप कहाँ से उठा लाए? वहीं जाकर डाल आइए।"

हमने मुस्कुराकर श्रीमती जी की तरफ देखा और कहा, "तुम हर समय बहस न किया करो। आखिर मैं इन्हें ढूँढ़-ढाँढ़कर लाया हूँ तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया,कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो।"

मगर श्रीमती जी बोलीं, "पहले बताओ, इनका क्या बनेगा?"

हम चाहते थे कि घर में किसी को कानों-कान ख़बर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएँ। और इसके बाद जब इसके पंडित हो जाएँ तब एक दिन ज़हाँगीर के मक़बरे को जाने का निश्चय करें। घरवालों को ताँगे में बिठा दें और कहें, "तुम चलो, हम दूसरे ताँगे में आते हैं।" जब वे चले जाएँ तब

WBBSE COPY NOT TO BE PUBLISHED